National Journal of Multidisciplinary Research and Development
www.multidisciplinaryjournal.org
ISSN: 2455-9040
Received: 22-01-2024, Accepted: 14-02-2024, Published: 08-03-2024
Volume 9, Issue 1, 2024, Page No. 44-47

माध्यमिक स्तर के हिंदी तथा अंग्रेजी माध्यम के विद्यार्थियों के बौध्दिक स्तर का तुलनात्मक अध्ययन

संजय कुमार शुक्ल[1], सुनील सिंह[2]
[1] असिस्टेंट प्रोफेसर, शिक्षा–संकाय विभाग, हंडिया पोस्ट ग्रेजुएट कॉलेज, हंडिया, प्रयागराज, उत्तर प्रदेश, भारत
[2] शिक्षा–संकाय विभाग, हंडिया पोस्ट ग्रेजुएट कॉलेज, हंडिया, प्रयागराज, उत्तर प्रदेश, भारत

सारांश
माध्यमिक स्तर के विद्यार्थी अपने बौद्धिक स्तर के अनुसार अधिगम व चिन्तन करते हैं। इस स्तर पर बुद्धि की अहम् आवश्यकता है। उच्च बौद्धिक स्तर का विद्यार्थी प्रतिभाशाली होता है और समाज के मान्य कृत्यों को करता हुआ समायोजित हो जाता है। इसके विपरीत निम्न बौद्धिक स्तर का विद्यार्थी मन्द बुद्धि बालक होता है और वह स्वयं को असमायोजित होता हुआ कल्पना जगत में विचरण करता रहता है। बौद्धिक स्तर का उसकी शैक्षिक उपलब्धि पर स्पष्ट प्रभाव दिखाई देता है और वह अपनी बौद्धिक क्षमता को बढ़ाते हुए तथा सकारात्मक व्यवहार करते हुए अपनी शैक्षिक संप्राप्ति में भी वृद्धि करता है । प्रायः यह देखा गया है कि हिंदी तथा अंग्रेजी माध्यम के विद्यार्थियों में शिक्षण अधिगम प्रक्रिया के विभिन्न पक्षों में अंतर दिखलाई पड़ता है। समाज में कुछ लोगों द्वारा अक्सर यह कहा जाता है कि अंग्रेजी माध्यम हिंदी माध्यम से ज्यादा उपयुक्त है तो कहीं दूसरी ओर कुछ लोगों का कहना है कि हिंदी माध्यम अंग्रेजी माध्यम की तुलना में विद्यार्थियों के लिए अधिक उपयुक्त है। प्राय : ऐसा देखा जाता है कि हिंदी माध्यम के विद्यालयों में अंग्रेजी माध्यम के विद्यालयों की तुलना में कमजोर शैक्षिक वातावरण होता है जबकि अंग्रेजी माध्यम के विद्यालयों में विद्यार्थियों के शैक्षिक उन्नयन के लिए आवश्यक समस्त विषय वस्तु का समावेश उचित मात्रा में पाया जाता है।

मूल शब्दः माध्यमिक स्तर, हिंदी तथा अंग्रेजी माध्यम के विद्यार्थी, बौद्धिक स्तर, मध्यमान, मानक विचलन, क्रांतिक निष्पत्ति आदि ।

किसी भी देश का भविष्य उस देश के बालकों के शिक्षा एवं विकास पर निर्भर करता है। आज हमारे देश की शिक्षा का उद्देश्य बालकों का सर्वांगीण विकास कर उन्हें लोकतंत्र का सुयोग्य नागरिक बनाना है। यह तभी सम्भव है जब प्रत्येक बालक तर्क कर सकता हो, भेद कर सकता हो, समझ सकता हो और नई स्थिति का सामना भी कर सकता हो एवं शिक्षा के सभी औपचारिक व अनौपचारिक अभिकरण अपने अपने स्थान पर जागरूक हों। शिक्षा के अनौपचारिक अभिकरण में बालक के घर का वातावरण प्रमुख है। बालक का बौद्धिक स्तर , उसकी शैक्षिक उपलब्धियाँ व शैक्षिक निष्पादन भी इस बात पर निर्भर करती हैं कि उसका उपर्युक्त विकास किस वातावरण में हो रहा है।आज शिक्षण संस्थाओं में जहाँ हम देखते हैं कि सभी बच्चों में समान रूप से बिना किसी भेदभाव के शिक्षा ग्रहण करते समय उनकी बौद्धिक स्तर एवं शैक्षिक उपलब्धि को निरंतर बढ़ाने का प्रयास किया जा रहा है । माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के हिंदी माध्यम या अंग्रेजी माध्यम में अध्ययन करने के पीछे सबसे बड़ा कारण उनके माता–पिता की आर्थिक एवं सामाजिक स्थिति होती है। ऐसे माता–पिता या अभिभावक जिनकी आर्थिक स्थिति अच्छी है वह हमेशा प्रयास करते हैं कि उनके बच्चों को अच्छी शिक्षा मिल सके जिसके लिए वे अपने बच्चों को अंग्रेजी माध्यम से पढ़ाने की व्यवस्था करते हैं। जबकि ऐसे माता–पिता जिनकी आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं है वे अपने बच्चों को किसी सामान्य विद्यालय अर्थात हिंदी माध्यम के विद्यालयों में प्रवेश दिलाते हैं। अंग्रेजी माध्यम के विद्यालय प्रायः विद्यार्थियों की शिक्षा के लिए उनके अभिभावकों से मोटी रकम वसूल करते हैं जिस कारण विद्यालय में विद्यार्थियों की उपयुक्त समस्त सुविधाओं यथा– विद्यालय वातावरण, उच्च शैक्षिक योग्यता वाले शिक्षक, पुस्तकालय, वाचनालय, प्रयोगशाला, आवश्यक शैक्षिक निर्देश इत्यादि का प्रबंध होता है। हिंदी माध्यम के विद्यालयों द्वारा विद्यार्थियों की माता–पिता अथवा अभिभावकों से अंग्रेजी माध्यम की तुलना में बहुत कम फीस लेते हैं जिस कारण उनके विद्यालय वातावरण के साथ–साथ समस्त आवश्यक शैक्षिक उपकरणों, शिक्षकों एवं अन्य विषय वस्तु का उचित प्रबंधन नहीं कर पाते हैं। जिसका सबसे अधिक प्रभाव विद्यार्थियों के बौद्धिक स्तर एवं उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ता है।

इस प्रकार हम देख सकते हैं कि किस तरह से अंग्रेजी माध्यम के विद्यार्थियों को वह समस्त सुविधाएं आसानी से उपलब्ध होती है जो कि उनके बौद्धिक स्तर एवं शैक्षिक उपलब्धि को आगे तक ले जाने में सफल होते हैं। जबकि हिंदी माध्यम के विद्यालयों में उपर्युक्त सुविधाओं की कमी पाई जाती है जिससे यह संभावना होती है कि हिंदी माध्यम के विद्यार्थियों की बौद्धिक स्तर एवं शैक्षिक उपलब्धि विकसित करने में बाधाएं उत्पन्न हो सकती हैं।

अध्ययन की आवश्यकता व महत्व

वर्तमान समय में अंग्रेजी माध्यम के विद्यालयों की स्थापना में तेजी आ गई है इसका सबसे बड़ा कारण यह है कि आज अंग्रेजी शिक्षा की बात खासतौर से गणित और विज्ञान विषयों की पढ़ाई अंग्रेजी माध्यम में अधिक आसान बनाई गई है। विश्व में प्रतिस्पर्धा को दृष्टिगत रखते हुए अंग्रेजी माध्यम में बच्चों को शिक्षा प्रदान करना आवश्यक हो गया है। आज प्राथमिक स्तर से लेकर माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक स्तर के साथ–साथ उच्च शिक्षा को भी अंग्रेजी में पढ़ाने की मांग बढ़ती जा रही है। लोगों का मानना है कि अंग्रेजी माध्यम से पढ़ाई करने वाले बच्चों की मानसिक सृजनात्मकता, बौध्दिक स्तर, शैक्षिक उपलब्धि के साथ–साथ अन्य मनोवैज्ञानिक गुणों में वृद्धि तेजी से होती है जबकि हिंदी माध्यम से पढ़ने वाले विद्यार्थियों में उपर्युक्त गुणों को विकसित करना एक कठिन काम हो जाता है। अंग्रेजी माध्यम के विद्यालयों में पढ़ने वाले बच्चों के माता–पिता उच्च आर्थिक स्थिति वाले होते हैं जिस कारण भी अपने बच्चों के शैक्षिक उन्नयन के लिए हर संभव प्रयास करते रहते हैं। ऐसे बच्चों के माता–पिता उनकी विद्यालय शिक्षा के अतिरिक्त घर पर भी ट्यूशन की व्यवस्था करते हैं। अंग्रेजी माध्यम के विद्यालयों में पढ़ने वाले बच्चों के माता–पिता अपने बच्चों के शैक्षिक उन्नयन करने के लिए उनके विद्यालय में जाकर उनके शिक्षकों से भी वार्तालाप करते हैं और उन्हें इस बात का ध्यान कराते हैं कि उनका बच्चा घर पर किस तरह से अधिगम करता है एवं उनसे यह जानने का प्रयास

करते हैं कि उनका बच्चा किस क्षेत्र में कमजोर है जिससे कि वे अपने बच्चों को उस क्षेत्र में विकास का उचित प्रबंधन कर सके। जबकि हिंदी माध्यम में पढ़ने वाले बच्चों के माता–पिता प्राय : इन सब बातों पर ध्यान नहीं देते कि उनका बच्चा घर पर किस तरह से पढ़ाई कर रहा है एवं ऐसे माता–पिता अपने बच्चों के विद्यालय में जाकर के शिक्षकों से मिलने का भी जोखिम नहीं लेना चाहते। क्योंकि ऐसे बच्चों के माता–पिता प्रायः कमजोर आर्थिक और शैक्षिक स्थिति वाली होते हैं।

उपर्युक्त समस्याओं को ध्यान में रखने पर हमें यह पता चलता है कि आज राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर ख्याति प्राप्त करने के लिए हम सभी को अंग्रेजी विषय की कितनी आवश्यकता है। क्योंकि अंग्रेजी भाषा के माध्यम से हम इंटरनेट का उपयोग आसानी से कर सकते हैं, तकनीकी के क्षेत्र में होने वाले विभिन्न नए–नए खोजों के संबंध में आसानी से ज्ञान प्राप्त कर सकते हैं, अंतरराष्ट्रीय स्तर पर घटने वाले विभिन्न घटनाओं एवं ज्ञान को प्राप्त करने में अंग्रेजी विषय हमारे लिए सहायक होता है। यह सभी तथ्य इस बात का वर्णन करते हैं कि यदि कोई बच्चा अंग्रेजी माध्यम से शिक्षा प्राप्त करता है तो उसके बौद्धिक स्तर के साथ–साथ उसकी शैक्षिक उपलब्धि में भी तीव्र गति से विकास होने की संभावना है। परंतु ऐसे बच्चे जो हिंदी माध्यम से अपनी शिक्षा प्राप्त करते हैं उनके पास अपने विकास के अवसर की कमी होती है। उपर्युक्त समस्याओं को ध्यान में रखने हुए शोधकर्ता के मन में जिज्ञासा उत्पन्न हुई और अपनी जिज्ञासा को शांत करने के लिए शोधकर्ता ने माध्यमिक स्तर के हिंदी तथा अंग्रेजी माध्यम के विद्यार्थियों के बौध्दिक स्तर का तुलनात्मक अध्ययन करने की आवश्यकता महसूस किया।

सम्बन्धित साहित्य का पुनरावलोकन

सम्बन्धित साहित्य से तात्पर्य अनुसंधान की समस्या से सम्बन्धित उन सभी प्रकार की पुस्तकों, ज्ञान–कोषों, पत्र–पत्रिकाओं, प्रकाशित तथा अप्रकाशित शोध–प्रबन्धों एवं अभिलेखों आदि से है, जिनके अध्ययन से अनुसंधानकर्ता को अपनी समस्या के चयन, परिकल्पनाओं के निर्माण, अध्ययन की रूपरेखा तैयार करने एवं कार्य को आगे बढ़ाने में सहायता मिलती है।

किसी भी विषय के विकास में किसी विशेष शोध प्रारूप का स्थान बनाने के लिए शोधकर्ता को पूर्व सिद्धान्तों एवं शोधों से भली–भाँति अवगत होना चाहिए। इस जानकारी को निश्चित करने के लिए व्यवहारिक ज्ञान में प्रत्येक शोध प्रारूप की प्रारम्भिक अवस्था में इसके सैद्धान्तिक एवं शोधित साहित्य की समीक्षा करनी होती है, यहाँ साहित्य समीक्षा का अर्थ दिया गया ।

एनीथा व अन्य (2013) – द्वारा सरकारी व प्राइवेट विद्यालयों के माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की बहु–बुद्धि के स्तरों का अध्ययन किया। इस अध्ययन का उद्देश्य नवीं कक्षा (सरकारी व प्राइवेट विद्यालयों) के विद्यार्थियो की बहु–बुद्धि स्तर का अध्ययन करना था। इस अध्ययन हेतु इन्होने सिकन्दराबाद के 240 विद्यार्थियों जिसमें से 120 छात्र व 120 छात्राएँ थी को न्यादर्श के रूप में लिया । ये सभी कक्षा नवीं के विद्यार्थी थे । न्यादर्शो का चयन यादृच्छिक विधि द्वारा विभिन्न सरकारी व प्राइवेट विद्यालयों से किया गया। अपने अध्ययन में इन्होने पाया कि सरकारी व प्राइवेट विद्यालय के विद्यार्थियों की बहुबुद्धिमता के स्तर में सार्थक अन्तर है। छात्राओं की बुद्धिमता का स्तर छात्रों की तुलना में उच्च है। सरकारी विद्यालय के विद्यार्थी तीन क्षेत्रों जैसे तार्किक, अन्तरव्यैक्तिक व अन्तराव्यैक्तिक क्षेत्र में प्राइवेट विद्यालय के विद्यार्थियों से उत्कृष्ट पाये गये साथ हीं छात्र आध्यात्मिक व प्राकृ -तिक बुद्धिमता में अच्छे पाये गये।

दलाल, रानी (2013) ने उच्चतर माध्यमिक छात्रों की सृजनात्मकता तथा बुद्धि में सम्बंध पर अध्ययन किया। हरियाणा के विभिन्न विद्यालयों से यादृच्छिक तकनीकी से 640 छात्रों को चुना गया। अध्ययन के परिणाम इस प्रकार प्राप्त हुए –

1. छात्रों की सृजनात्मकता तथा बुद्धि में सार्थक सम्बन्ध पाया गया ।
2. उच्च सृजनात्मक छात्रों तथा निम्न सृजनात्मक छात्रों की बुद्धि में सार्थक अन्तर पाया गया ।

दानिश्ता (2014) ने माध्यमिक स्तर के छात्रों की बुद्धि तथा शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सम्बंध पर अध्ययन किया। प्रतिदर्श के रूप में यादृच्छिक तकनीकी से 150 विद्यार्थियों को लिया गया । अध्ययन का परिणाम यह प्राप्त हुआ कि बुद्धि धनात्मक एवं सार्थक रुप से शैक्षिक उपलब्धि से सम्बन्धित है ।

शोध अध्ययन के उद्देश्य

प्रस्तुत शोध के निम्नलिखित उद्देश्य है–

1. माध्यमिक स्तर के शहरी क्षेत्र के हिंदी तथा अंग्रेजी माध्यम के विद्यार्थियों के बौध्दिक स्तर का अध्ययन करना ।
2. माध्यमिक स्तर के ग्रामीण क्षेत्र के हिंदी तथा अंग्रेजी माध्यम के विद्यार्थियों के बौध्दिक स्तर का अध्ययन करना ।

शोध अध्ययन की परिकल्पनाएँ

शोधकर्ता द्वारा प्रस्तुत शोध को अधोलिखित परिकल्पनाओं के अन्तर्गत सम्पादित किया गया है –

1. माध्यमिक स्तर के शहरी क्षेत्र के हिंदी तथा अंग्रेजी माध्यम के विद्यार्थियों के बौध्दिक स्तर में सार्थक अंतर नहीं है।
2. माध्यमिक स्तर के ग्रामीण क्षेत्र के हिंदी तथा अंग्रेजी माध्यम के विद्यार्थियों के बौध्दिक स्तर में सार्थक अंतर नहीं है।

शोध विधि – प्रस्तुत अध्ययन में प्रयोगात्मक भोध की सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है ।

न्यादर्शन – जनसंख्या (इकाई, वस्तुओं या मनुष्यों का समूह) में किसी चर का विशिष्ट मान ज्ञात करने के लिए उसकी कुछेक इकाइयों को चुन लिया जाता है तो इस चुनने की क्रिया को न्यादर्शन कहते हैं, तथा चुनी हुई इकाइयों के समूह को न्यादर्श कहते हैं। प्रस्तुत अध्ययन में प्रयागराज जनपद के शहरी व ग्रामीण क्षेत्रों में स्थित माध्यमिक विद्यालयों के क्रमशः 200–200 हिंदी तथा अंग्रेजी माध्यम के विद्यार्थियों को संभाव्यता न्यादर्शन के आधार पर चुना गया है ।

शोध उपकरण

डा० आर०के० टंडन का सामूहिक मानसिक योग्यता परीक्षा (1/61)

प्रस्तुत शोध में माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों के बौद्धिक स्तर को मापने के लिए डा० आर०के० टंडन द्वारा निर्मित एवं प्रमापीकृ त सामूहिक मानसिक योग्यता परीक्षा (1/61)का प्रयोग किया गया है यह परीक्षण सामान्य मानसिक योग्यता के ग्रुप टेस्ट (20/52)का हिंदी अनुवाद है। इसे सामूहिक मानसिक योग्यता परीक्षा का नाम दिया गया है। यह एक सर्पिल ऑननिबस प्रकार का मौखिक समूह परीक्षण है जिसमें 100 प्रश्न हैं। स्कोरिंग को वस्तुनिष्ठ और पूर्ण प्रमाणित बनाने के लिए प्रश्नों के चार से पांच विकल्प उपलब्ध कराए गए हैं। सौ कथनों को नौ उप–परीक्षणों में वितरित किया गया है, अर्थात् संख्या श्रृंखला, गणितीय निर्देश, निर्देशों का पालन, शब्दावली समानताएं, शब्दावली विपरीत, वर्गीकरण, सर्वोत्तम उत्तर, सादृश्य और तर्क। सभी वस्तुओं को

कठिनाई के बढ़ते क्रम में व्यवस्थित किया गया है। अभ्यास के लिए शुरुआत में दस अतिरिक्त कथन उपलब्ध कराए गए हैं।
परिकल्पना 1– माध्यमिक स्तर के शहरी क्षेत्र के हिंदी तथा अंग्रेजी माध्यम के विद्यार्थियों के बौध्दिक स्तर में सार्थक अंतर नहीं है।

तालिका 1: माध्यमिक स्तर के शहरी क्षेत्र के हिंदी व अंग्रेजी माध्यम के छात्रों के बौद्धिक स्तर का विवरणः

विद्यार्थी	संख्या	माध्य	मानक विचलन	स्वतन्त्रता मान	'टी' मान	टिप्पणी	
						.01 स्तर	.05 स्तर
हिन्दी माध्यम	200	100.17	9.331	398	1.94	कोई सार्थक अंतर नहीं है	कोई सार्थक अंतर नहीं है
अंग्रेजी माध्यम	200	102.08	10.265				

.05 सार्थकता स्तर का मान =1.96, .01सार्थकता स्तर का मान = 2.58

तालिका संख्या 1 यह दर्शाती हैं कि माध्यमिक स्तर के शहरी क्षेत्र के हिंदी तथा अंग्रेजी माध्यम के विद्यार्थियों की बौध्दिक स्तर में कोई अंतर नहीं है। चूंकि परिगणित क्रांतिक अनुपात 1. 94 ,स्वतन्त्रता मान 398 के लिए सार्थक नहीं हैं। अत : उपरोक्त शून्य परिकल्पना "माध्यमिक स्तर के शहरी क्षेत्र के हिंदी माध्यम तथा अंग्रेजी माध्यम के विद्यार्थियों के बौध्दिक स्तर में सार्थक अंतर नहीं है " स्वीकार की जाती है तथा प्राप्त परिणाम को भी स्वीकार किया जाता हैं।

परिकल्पना 2– माध्यमिक स्तर के ग्रामीण क्षेत्र के हिंदी तथा अंग्रेजी माध्यम के विद्यार्थियों के बौध्दिक स्तर में सार्थक अंतर नहीं है।

तालिका 2: माध्यमिक स्तर के ग्रामीण क्षेत्र के हिंदी व अंग्रेजी माध्यम के छात्रों के बौद्धिक स्तर का विवरणः

विद्यार्थी	संख्या	माध्य	मानक विचलन	स्वतन्त्रता मान	'टी' मान	टिप्पणी	
						.01 स्तर	.05 स्तर
हिन्दी माध्यम	200	95.77	9.261	398	4.126	सार्थक अंतर है	सार्थक अंतर है
अंग्रेजी माध्यम	200	100.5	11.378				

.05 सार्थकता स्तर का मान =1.96, .01सार्थकता स्तर का मान = 2.58

तालिका संख्या 2 यह दर्शाती हैं कि माध्यमिक स्तर के ग्रामीण क्षेत्र के हिंदी माध्यम व अंग्रेजी माध्यम के विद्यार्थियों के बौद्धिक स्तर में अंतर है। चूंकि परिगणित क्रांतिक अनुपात 4 . 126 , स्वतन्त्रता मान 398 के लिए सार्थक हैं। अत : उपरोक्त शून्य परिकल्पना "माध्यमिक स्तर के ग्रामीण क्षेत्र के हिंदी माध्यम तथा अंग्रेजी माध्यम के विद्यार्थियों के बौध्दिक स्तर में सार्थक अंतर नहीं है " अस्वीकार की जाती है तथा प्राप्त परिणाम को स्वीकार किया जाता हैं।

निष्कर्ष

सांख्यिकीय विश्लेषण से यह ज्ञात होता है कि माध्यमिक स्तर के शहरी क्षेत्र के हिंदी व अंग्रेजी माध्यम के विद्यार्थियों के बौध्दिक स्तर में सार्थक अंतर नहीं होता है। शहरी क्षेत्र में स्थित हिंदी व अंग्रेजी माध्यम के विद्यार्थियों के बौद्धिक स्तर एक समान पाए जाने का संभावित कारण यह हो सकता है कि शहरी क्षेत्र में स्थित प्रत्येक विद्यालय अपनी साख को ऊंचाई तक ले जाने का प्रयास करते हैं। इन विद्यालयों में विद्यार्थियों के माता–पिता से शिक्षा के नाम पर मोटी फीस वसूली जाती है। इन विद्यालयों के द्वारा विद्यार्थियों को एवं उनके माता–पिता को अधिक लुभाने के लिए, अपने विद्यालय में अधिक से अधिक बच्चों को प्रवेश देने के लिए एवं विद्यार्थियों के बौद्धिक विकास के साथ–साथ अन्य पक्ष का विकास करने के लिए विभिन्न प्रकार के कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है। इस प्रकार शहरी क्षेत्र में स्थित हिंदी माध्यम तथा अंग्रेजी माध्यम के विद्यालयों द्वारा विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास पर हर तरह से ध्यान दिया जाता है। उपरोक्त कारणों से ही शहरी क्षेत्र में स्थित हिंदी व अंग्रेजी माध्यम के विद्यार्थियों के बौद्धिक स्तर एक समान पाए गए हैं।दूसरी तरफ यह देखा गया कि माध्यमिक स्तर के ग्रामीण क्षेत्र में स्थित हिंदी व अंग्रेजी माध्यम के विद्यार्थियों के बौद्धिक स्तर में सार्थक अंतर है। ग्रामीण क्षेत्र में स्थित अंग्रेजी माध्यम के विद्यार्थियों का बौद्धिक स्तर हिंदी माध्यम के विद्यार्थियो के बौद्धिक स्तर से अधिक है। उपरोक्त परिणाम आने का संभावित कारण यह हो सकता है कि अंग्रेजी माध्यम से अध्ययन करने वाले विद्यार्थियों के विद्यालयों में विभिन्न प्रकार के बौद्धिक क्रियाओं से संबंधित मानसिक क्रियाओं तथा विभिन्न खेलों का आयोजन समय–समय पर किया जाता है जिससे इन विद्यार्थियों को अधिक से अधिक बौद्धिक क्रिया करने का अवसर प्राप्त होता है जबकि इसके विपरीत हिंदी माध्यम से अध्ययन करने वाले विद्यार्थियों के विद्यालयों में इस प्रकार के आयोजन की कमी होती है अर्थात हिंदी माध्यम के विद्यार्थियों को बौद्धिक क्रियाकलाप करने का अवसर कम प्राप्त होता है। उपरोक्त कारणों से अंग्रेजी माध्यम के विद्यार्थियों का बौद्धिक स्तर हिंदी माध्यम के विद्यार्थियों से अधिक पाया गया है।

शैक्षिक निहितार्थ

प्रस्तुत शोध स्पष्ट करता है कि विद्यार्थियों के बौद्धिक स्तर एवं शैक्षिक उपलब्धि का विकास करने के लिए अच्छे विद्यालय एवं अच्छे शिक्षक की आवश्यकता होती है, न की विद्यालय शहरी क्षेत्र में स्थित है अथवा अंग्रेजी माध्यम का विद्यालय होना चाहिए। विद्यालय के माध्यम एवं विद्यालय किस क्षेत्र में स्थित है, विद्यालय के अच्छे होने का गुण नहीं है। किसी विद्यालय के अच्छे होने का सबसे बड़ा प्रमाण यह होता है कि विद्यालय का प्रबंध तंत्र विद्यार्थियों के उन्नयन के लिए कितना तत्पर है, शिक्षक अपने विद्यार्थियों को शिक्षा प्रदान करने में कितना तत्पर है, विद्यालय का वातावरण विद्यार्थियों के अधिगम के लिए कितना सुगम है क्या विद्यालय के शिक्षक ,अन्य कर्मचारी एवं जिम्मेदार अधिकारी विद्यार्थियों की शैक्षिक आवश्यकताओं के साथ–साथ अन्य आवश्यकताओं पर भी ध्यान देते है ? जिससे के विद्यार्थियों का उचित शैक्षणिक विकास हो सके इत्यादि। क्योंकि विद्यालय तंत्र व विद्यालय में योजित शिक्षकों का यह उत्तरदायित्व होता है की वे अपने विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास हेतु समुचित प्रयास करे ।

सन्दर्भ सूची

1. शर्मा, आर0ए0 (2008) : भारतीय शिक्षा प्रणाली का विकास, आर0लाल बुक डिपो, मेरठ।
2. भटनागर, डॉ0 ए0बी0 (2008) : अधिगम एवं शिक्षण, आर0 लाल बुक डिपो, मेरठ।
3. अग्रवाल, डॉ0 नीता (2008) : बाल विकास, अग्रवाल पब्लिकेशन, आगरा।
4. नागर, डॉ0 बीनू एवं राजपूत, डॉ0 आशा (2010) : बाल विकास आगरा पब्लिकेशन, आगरा।
5. जायसवाल, सीताराम (2012) : व्यक्तित्व का मनोविज्ञान, श्री विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा।
6. श्रीवास्तव, डी0एन0 एवं पाठक, के0पी0 (2012) : बाल विकास एवं बाल मनोविज्ञान, आगरा पब्लिकेशन, आगरा।
7. श्रीवास्तव, महेन्द्र नाथ एवं कुमार सतीश (2014) :बाल विकास एवं सीखने की प्रक्रिया, अग्रवाल पब्लिकेशन, आगरा।

8. श्रीवास्तव, डॉ0 डी0एन0 (2020) : अनुसंधान विधियां, साहित्य प्रकाशन, आगरा।
9. गुप्ता, प्रो0 एस0पी0 एवं गुप्ता, डॉ0 अलका, (2013) : सांख्यिकीय विधियाँ, शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद।
10. राय, पारस नाथ (2008) : अनुसंधान परिचय, लक्ष्मी नारायण अग्रवाल, आगरा।
11. सिंह, अरूण कुमार (2017) : मनोविज्ञान, समाजशास्त्र तथा शिक्षा में शोध विधियाँ, मोतीलाल बनारसीदास, बनारस।